फिंच ने सर्वकालिक एकदिवसीय टीम में सचिन से पहले विराट को रखा

सिडनी

आस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान एरोन फिंच ने अपनी पसंदीदा खिलाड़ियों की सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ एकदिवसीय टीम बनायी है। हैरानी की बात ये है कि फिंच ने अपनी इस टीम में शीर्ष -8 बल्लेबाजों की जो रैंकिंग जारी की है उससे क्रिकेट जगत में विवाद उठ गया है। फिंच ने महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर को दूसरे स्थान पर रखा है जबकि विराट कोहली को पहले पायदान पर रखा है। वहीं भारत के आक्रामक सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा को फिंच की इस प्रतिष्ठित सूची में शीर्ष-3 में भी जगह नहीं मिल पाई, जिससे कई क्रिकेट प्रशंसकों में नाराजगी है।

गौरतलब है कि एकदिवसीय प्रारुप में जब भी सर्वकालिक महान बल्लेबाजों की बात होती है, तो तेंदुलकर और विराट के बीच तुलना होना लाजमी है पर फिंच ने आंकड़ों और आधुनिक क्रिकेट में प्रभाव के विश्लेषण के आधार पर एक अलग निष्कर्ष निकाला। फिंच के अनुसार, आधुनिक क्रिकेट की चुनौतियों, दबाव और मैच जिताने की निरंतर क्षमता को देखते हुए विराट इतिहास के सबसे महान वनडे बल्लेबाज हैं।

कोहली जिस दबाव में खेलते हुए निरंतर मैच जिताऊ पारियां खेलते हैं, वह उन्हें सचिन से आगे खड़ा करती है। वहीं अगर आंकड़ों के दृष्टिकोण से इस तुलना को देखें, तो तेंदुलकर ने अपने करियर में 463 एकदिवसीय मैचों की 452 पारियों में 18,426 रन बनाए हैं, जिसमें 49 शतक और 96 अर्धशतक शामिल हैं जबकि विराट कोहली ने अब तक खेले गए अपने 314 एकदिवसीय मुकाबलों की 302 पारियों में ही 14,941 रन बना लिए हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि कम मैच खेलने के बावजूद विराट ने एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय में 54 शतक और 79 अर्धशतक जड़े हैं। सचिन के मुकाबले काफी कम मैच खेलकर शतकों के मामले में उनसे आगे निकल जाना ही विराट की उस क्षमता को दर्शाता है, जिसने एरोन फिंच जैसे दिग्गज को कोहली को सचिन से ऊपर नंबर एक पायदान पर रखने पर मजबूर किया। फिंच ने स्वीकार किया कि सचिन का युग और उनके द्वारा बनाए गए रनों को कभी भुलाया नहीं जा सकता, लेकिन मौजूदा युग के समीकरणों में विराट का प्रभाव थोड़ा भारी पड़ता है।

इस सूची में तीसरे स्थान पर दक्षिण अफ्रीका के मिस्टर 360 डिग्री बल्लेबाज एबी डिविलियर्स को जगह मिली है, जिनकी मैदान के चारों तरफ शाट खेलने की क्षमता ने एकदिवसयी क्रिकेट की परिभाषा ही बदल दी थी। वहीं, आस्ट्रेलिया को दो बार अपनी कप्तानी में विश्व कप जिताने वाले रिकी पोंटिंग को फिंच ने चौथे स्थान पर रखा है।

क्रिकेट इतिहास के सबसे खौफनाक और आक्रामक बल्लेबाजों में से एक, वेस्टइंडीज के सर विवियन रिचर्ड्स को फिंच की इस रैंकिंग में छठा स्थान मिला, जिसके पीछे फिंच ने एक मजबूरी बताई। दरअसल, उन्हें दिए गए विकल्पों में रिचर्ड्स का नाम सबसे अंत में आया था और सूची के स्लाट पहले ही भर चुके थे, जिसके चलते उन्हें मजबूरी में छठे स्थान पर समायोजित करना पड़ा। सूची के अंतिम दो पायदानों पर श्रीलंका के आक्रामक सलामी बल्लेबाज सनथ जयसूर्या और आस्ट्रेलिया के विकेटकीपर बल्लेबाज एडम गिलक्रिस्ट का कब्जा रहा। जयसूर्या को 7वें और गिलक्रिस्ट को 8वें स्थान पर रखा गया।

न्यूज ब्रीफ

तन्वी शर्मा ने ताइपे ओपन सुपर-300 बैडमिंटन टूर्नामेंट का महिला एकल खिताब जीतकर इतिहास रचा

ताइपे (ताइवान)। भारत की 17 वर्षीय उभरती बैडमिंटन स्टार तन्वी शर्मा ने ताइपे ओपन सुपर-300 बैडमिंटन

टूर्नामेंट का महिला एकल खिताब जीतकर इतिहास रच दिया। रविवार को खेले गए फाइनल में तन्वी ने वियतनाम की थुई लिन्ह गुयेन को सीधे गेमों में 21-16, 21-16 से हराकर अपने करियर का पहला बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर खिताब अपने नाम किया। महज 36 मिनट तक चले मुकाबले में तन्वी ने शुरुआत से ही आक्रामक खेल दिखाया और अनुभवी वियतनामी खिलाड़ी को कोई मौका नहीं दिया। इस शानदार जीत के साथ उन्होंने अपने करियर की अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि हासिल की। पिछले साल यूएस ओपन सुपर-300 में उपविजेता रहीं तन्वी ने इस बार खिताब जीतकर साबित कर दिया कि वह भारतीय बैडमिंटन की अगली बड़ी स्टार बनने की राह पर हैं। उनके खेल में लगातार आक्रामकता और निरंतरता साफ दिखाई दी। भारतीय बैडमिंटन संघ (बाएआई) ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स' पर तन्वी की उपलब्धि की सराहना करते हुए लिखा, 17 साल की उम्र... रिकार्ड तोड़ने वाली... चैंपियन! तन्वी शर्मा ने ताइपे ओपन 2026 जीतकर टूर्नामेंट के इतिहास की सबसे युवा चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया। साथ ही वह सुपर-300+ खिताब जीतने वाली भारत की चौथी महिला एकल खिलाड़ी भी बन गई हैं। तन्वी ने फाइनल में पहुंचने से पहले सेमीफाइनल में चीनी ताइपे की हुआंग यू-हसुन को 21-17, 21-11 से हराया था। तन्वी शर्मा की यह ऐतिहासिक जीत भारतीय बैडमिंटन के लिए बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है और आने वाले वर्षों में उनसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और भी शानदार प्रदर्शन की उम्मीद रहेगी।

भगवान बालाजी की शरण में पहुंचे हार्दिक पंड्या, पूजा के साथ ही मुंडन भी कराया

तिरुपति। भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी आलराउंडर हार्दिक पंड्या तिरुपति बालाजी की शरण में पहुंचे हैं। पंड्या भक्ति भ्राव से तिरुमाला स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में पूजा-अर्चना करते दिखे। इस दौरान उनके बदले हुए स्वरूप ने सभी को हैरान कर दिया। हार्दिक ने भगवान वेंकटेश्वर के दरबार में मुंडन भी कराया। इस दैरान वह सफेद कमीज, लुंगी और गले में गमछे में दिखे। उन्होंने भगवान बालाजी की पूजा अर्चना कर आर्शीवाद भी प्राप्त किया। उनके इस नए लुक को देखकर कई प्रशंसक भी हैरान हो गये। मंदिर में प्रवेश के लिए हार्दिक ने पारंपरिक अंगवस्त्रम धारण किया, जिसमें सफेद कमीज के साथ सफेद लुंगी और गले में गमछा शामिल था। दक्षिण भारतीय परंपरा में यह पहनावा पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। इस दौरान उनकी महिला मित्र महिका शर्मा भी मौजूद थीं। हार्दिक ने मंदिर के तय प्रोटोकाल के तहत भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन किए। दर्शनोपरांत, मंदिर के पुजारियों ने उन्हें वैदिक आशीर्वाद प्रदान किया और पवित्र तीर्थ प्रसाद भेंट किया। दरअसल, तिरुमाला मंदिर में श्रद्धालु अपनी श्रद्धा और मन्नत पूरी होने पर केशदान करते हैं, और हार्दिक ने भी इसी परंपरा के तहत अपना मुंडन कराया।

दिलीप ट्राफी मुकाबलों में लाल गेंद से होगी वैभव की असली परीक्षा

मुम्बई। 15 साल के उभरते हुए बल्लेबज वैभव सूर्यवंशी की असली परीक्षा अब दिलीप ट्राफी मुकाबलों में लाल

गेंद से खेलते समय होगी। सीमित ओवरों के प्रारूप में वैभव ने जमकर रन बनाये हैं पर लाल गेंद से रन बनना आसान नहीं होता। आगामी दलीप ट्राफी उनके लिए केवल एक टूर्नामेंट नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने वाला मंच साबित होगा। चयनकर्ताओं ने उन पर बड़ा भरोसा जताते हुए उन्हें टीम का उपकप्तान नियुक्त किया है, जो उनके लिए अतिरिक्त दबाव के साथ ही प्रेरणास्पद भी होगा। जहां एक ओर वैभव अपनी आक्राममक बल्लेबाजी से सफेद गेंद क्रिकेट में छाये रहते हैं। वहीं वहीं फर्स्ट क्लास क्रिकेट में उनकी राह उतनी आसान नहीं रही है। पिछले आईपीएल सत्र में उन्होंने राजस्थान रायल्स की ओर से खेलते हुए 16 मैचों में 237.30 के विस्फोटक स्ट्राइक रेट से 776 रन बनाए थे और आरेंज कैप जीती थी। इसके अलावा, वह टीम इंडिया के लिए टी-20 अंतरराष्ट्रीय में भी खेल चुके हैं और लिस्ट-ए मैचों में 43.88 की औसत से 564 रन बनाए हैं। लेकिन रणजी ट्राफी के आंकड़े एक विपरीत रहे हैं। वैभव ने जनवरी 2024 में मुंबई के खिलाफ महज 12 साल की उम्र में अपना रणजी डेब्यू कर इतिहास रचा था। 8 फर्स्ट क्लास मैचों में उनका औसत केवल 17.25 रहा है, जिसमें वे 207 रन ही बना सके हैं। इस प्रारूप में उनका सबसे अधिक स्कोर 93 रन है और वे अभी तक एक भी शतक नहीं लगा पाए हैं।

ग्लासगो में भारतीय बाक्सरों की चमक, अंकुश सचिन स्वर्ण विजेता, लवलीना को रजत

ग्लासगो

राष्ट्रमंडल खेल 2026 में भारतीय मुक्केबाजों का शानदार प्रदर्शन जारी है। अंकुश पंघाल और सचिन सिवाच ने अपने-अपने वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर भारत के मुक्केबाजी अभियान को नई ऊंचाई दी, जबकि ओलंपिक पदक विजेता लवलीना बोरगोहाईं ने महिला 75 किलोग्राम वर्ग में रजत पदक अपने नाम किया। इन शानदार प्रदर्शनों की बदौलत भारत पदक तालिका में चौथे स्थान पर पहुंच गया।

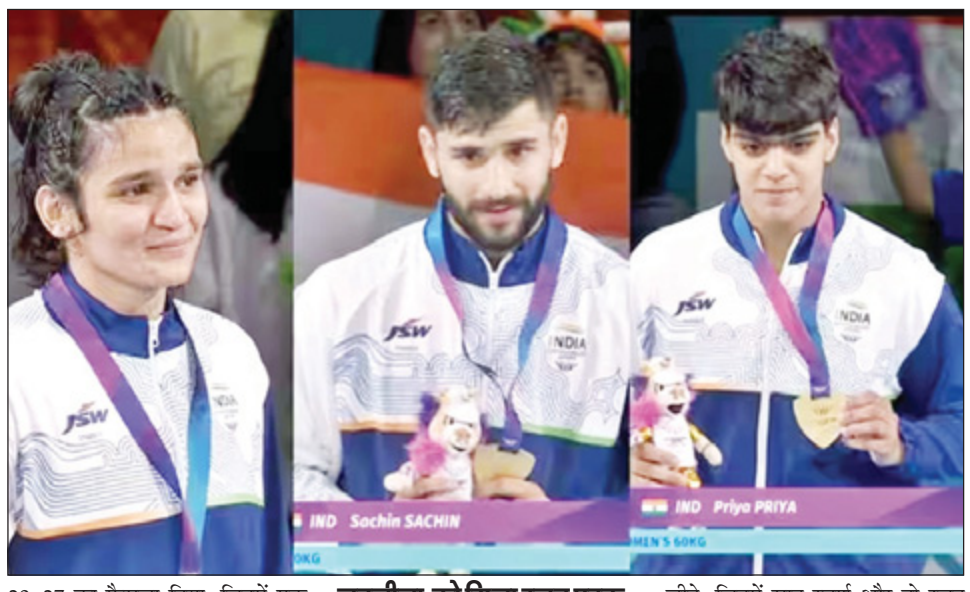

अंकुश पंघाल बने 80 किग्रा वर्ग के चैंपियन

पुरुषों के 80 किलोग्राम वर्ग के फाइनल में अंकुश पंघाल ने मेजबान इंग्लैंड के शिट्टू डिमेजी को 4-1 के स्प्लिट फैसले से हराकर स्वर्ण पदक जीता।

पहले राउंड में कुछ जजों के स्कोरकार्ड पर पिछड़ने के बावजूद अंकुश ने दूसरे और तीसरे राउंड में शानदार वापसी की। आक्रामक पंच, सटीक काउंटर अटैक और बेहतरीन रिंग कंट्रोल के दम पर उन्होंने मुकाबले का रुख अपने पक्ष में कर लिया।

तीन जजों ने उन्हें 29-26 से विजेता घोषित किया, जबकि अन्य दो जजों ने 28-27 का फैसला दिया, जिनमें एक अंकुश और एक इंग्लैंड के मुक्केबाज के पक्ष में था।

सचिन सिवाच ने रोमांचक मुकाबले में जीता गोल्ड

पुरुषों के 60 किलोग्राम वर्ग के फाइनल में भारत के सचिन सिवाच ने नामीबिया के ट्रायअगेन मोर्नी नदेवेलो को बेहद करीबी मुकाबले में 3-2 के स्प्लिट निर्णय से हराकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

तीनों राउंड में कांटे की टक्कर देखने को मिली। सचिन ने पूरे मुकाबले में संयम बनाए रखा और निर्णायक मौकों पर सटीक पंच लगाकर जजों को प्रभावित किया। अंत में तीन जजों ने भारतीय मुक्केबाज के पक्ष में फैसला सुनाया, जबकि दो जजों ने नामीबियाई खिलाड़ी को बढ़त दी।

लवलीना को मिला रजत पदक

महिला 75 किलोग्राम वर्ग के फाइनल में भारत की स्टार मुक्केबाज और टोक्यो ओलंपिक कांस्य पदक विजेता लवलीना बोरगोहाईं को आस्ट्रेलिया की एम्मा-सू ग्रीनट्री के खिलाफ 4-1 के स्प्लिट फैसले से हार का सामना करना पड़ा।

लवलीना ने पूरे मुकाबले में शानदार संघर्ष किया और कई प्रभावी पंच भी लगाए, लेकिन जजों ने आस्ट्रेलियाई मुक्केबाज की आक्रामकता और रिंग नियंत्रण को अधिक प्रभावी माना। इसके बावजूद लवलीना ने रजत पदक जीतकर भारत के पदक अभियान में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मुक्केबाजी में भारत का दबदबा

भारतीय मुक्केबाजों ने कुल नौ पदक जीते, जिनमें सात स्वर्ण और दो रजत शामिल रहे। स्वर्ण पदक जीतने वालों में अंकुश पंघाल, सचिन सिवाच, अरुंधति चौधरी, प्रिया, साक्षी, प्रीति और जैस्मीन शामिल हैं, जबकि लवलीना बोरगोहाईं और जादूमणि सिंह ने रजत पदक हासिल किए।

इसके अलावा पुरुषों की एफ-57 शाटपुट स्पर्धा में भारत ने पहला और दूसरा स्थान हासिल किया तथा जूडो में कांस्य पदक भी जीता। इन उपलब्धियों के दम पर भारत ने राष्ट्रमंडल खेल 2026 की पदक तालिका में चौथा स्थान हासिल कर लिया है। भारत के खाते में अब तक 35 पदक आ चुके हैं, जिनमें 11 स्वर्ण, 16 रजत और 8 कांस्य पदक शामिल हैं। मुक्केबाजी में अभी भी कई भारतीय खिलाड़ी फाइनल में पहुंच चुके हैं, जिससे पदकों की संख्या में और इजाफा होने की उम्मीद है।

देश के लिए लड़ते हुए गंवाया एक पैर, अब कामनवेल्थ में जीता स्वर्ण; सोमन राणा बोले- आसान नहीं थी राह

ग्लास्गो

कामनवेल्थ गेम्स 2026 में भारत के लिए ऐतिहासिक स्वर्ण पदक जीतने वाले पैरा एथलीट सोमन राणा की सफलता संघर्ष, साहस और जज्बे की मिसाल है। पुरुष एफ57 शाटपुट स्पर्धा में 13.40 मीटर का सर्वश्रेष्ठ थ्रो कर स्वर्ण जीतने वाले सोमन ने बताया कि भारतीय सेना में ड्यूटी के दौरान उन्होंने अपना दाहिना पैर गंवा दिया था। इसके बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और देश के लिए कामनवेल्थ गेम्स का स्वर्ण पदक जीतकर नया इतिहास रच दिया।

एक पैर गंवाने के बाद सब कुछ बदल गया

2022 एशियाई पैरा खेलों के रजत पदक विजेता सोमन ने कहा कि उनका सफर बिल्कुल आसान नहीं था। उन्होंने बताया, मैं भारतीय सेना में हूं। 2006 में ड्यूटी के दौरान मेरा दाहिना पैर चला गया। उसके बाद भी मैं सेवा करता रहा, लेकिन जब पैरालंपिक खेलों के बारे में पता चला तो 2017 से इसकी तैयारी शुरू कर दी।

उन्होंने आगे कहा, एक पैर गंवाने के बाद बहुत मुश्किलें आईं। आम इंसान छोटी चोट के बाद भी चलने में परेशानी महसूस करता है, जबकि मुझे कृत्रिम पैर के साथ चलना सीखना था और फिर उसी के साथ खेलों में उतरना था। धीरे-धीरे हर चुनौती को पार करते हुए मैं यहां तक पहुंचा।

दूसरे पैरा खिलाड़ियों से मिली प्रेरणा

सोमन ने बताया कि शुरुआती दिनों में उन्हें लगता था कि कृत्रिम पैर के सहारे खेलना संभव नहीं होगा। लेकिन दूसरे पैरा एथलीटों

को देखकर उनका आत्मविश्वास बढ़ा। उन्होंने कहा, शुरुआत में समझ नहीं आता था कि कृत्रिम पैर के साथ कैसे चलूंगा और कैसे खेलूंगा। फिर मैंने ऐसे पैरा एथलीटों को देखा, जिनका पूरा पैर ही नहीं था। तब मुझे लगा कि अगर वे इतना कर सकते हैं तो मैं भी कर सकता हूं। वहीं से मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली।

परिवार, सेना और साई को दिया सफलता का श्रेय

सोमन ने अपनी इस ऐतिहासिक उपलब्धि का श्रेय परिवार, भारतीय सेना, भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) और पैरालंपिक कमेटी आफ इंडिया (पीसीआई) को दिया। उन्होंने कहा, परिवार, सेना, साई और पीसीआई ने हर कदम पर मेरा साथ दिया। उनके सहयोग की वजह से ही मैं इस मुकाम तक पहुंच पाया और देश के लिए स्वर्ण पदक जीत सका। मैं अपना यह मेडल उन सभी लोगों को समर्पित करता हूं, जिन्होंने मुश्किल समय में मेरा हौसला बढ़ाया।

सोमन राणा की यह कहानी बताती है कि मजबूत इरादों के सामने कोई भी चुनौती बड़ी नहीं होती। देश की सेवा करते हुए एक पैर गंवाने के बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी और अब कामनवेल्थ गेम्स में स्वर्ण पदक जीतकर करोड़ों लोगों के लिए प्रेरणा बन गए।

अजारेई की हैट्रिक से नार्थईस्ट यूनाइटेड की धमाकेदार शुरुआत, बोडोलैंड एफसी को 6-0 से रौंदा

गुवाहाटी। गत चैंपियन नार्थईस्ट यूनाइटेड एफसी ने 135वें डूरंड कप में खिताब बचाने के अभियान का शानदार आगाज किया। इंदिरा गांधी एथलेटिक स्टेडियम में ग्रुप एफ के मुकाबले में नार्थईस्ट यूनाइटेड ने बोडोलैंड एफसी को 6-0 से करारी शिकस्त दी। वापसी कर रहे अलाउद्दीन अजारेई ने शानदार हैट्रिक लगाकर टीम की बड़ी जीत की नींव रखी। मैच से पहले हुआ भव्य उद्घाटन समारोह इससे पहले भव्य उद्घाटन समारोह में असम की सांस्कृतिक विरासत, भारतीय सशस्त्र बलों की सैन्य परंपराओं और एशिया के सबसे पुराने फुटबाल टूर्नामेंट की विरासत का शानदार संगम देखने को मिला। उद्घाटन समारोह में असम के खेल मंत्री बिस्वजीत दैमारी मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। वित्त, पर्यावरण एवं वन मंत्री जयंत मल्लबरुआह, पूर्वी कमान के जनरल आफिसर कमांडिंग-इन-चीफ लेफ्टिनेंट जनरल वीएमबी कृष्णन, चतुर्थ कोर के जनरल आफिसर कमांडिंग लेफ्टिनेंट जनरल नीरज शुक्ला समेत सेना और राज्य सरकार के कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। समारोह की शुरुआत हाट एयर बैलून, जैज बैंड और सेना के ब्रास व पाइप बैंड की संयुक्त प्रस्तुति से हुई। इसके बाद कुत्तों के प्रदर्शन, सैन्य बैंड और एनसीसी की छात्राओं के बैंड ने दर्शकों का मनोरंजन किया।

अमेरिकी ओपन के मिश्रित युगल में पहली बार उतरेगी जोकोविच-साबालेंका की जोड़ी

न्यूयार्क

अमेरिका में इस माह के अंत में शुरु होने वाली यूएस ओपन टेनिस टूर्नामेंट की मिश्रित युगल स्पर्धा इस साल और भी रोमांचक होगी। इसमें दुनिया के कई दिग्गज टेनिस सितारे एक साथ कोर्ट पर उतरने जा रहे हैं। इमसें सर्बिया के नोवाक जोकोविच और बेलारुस की महिला टेनिस स्टार आर्यना साबालेंका की जोड़ी है, जो पहली बार इस स्पर्धा में एक साथ खेलती नजर आएगी।

जोकोविच और साबालेंका 25 अगस्त से न्यूयार्क में शुरू होने वाली इस दो दिवसीय प्रतियोगिता में भाग लेंगे। टेनिस जगत इस जोड़ी को प्रतियोगिता की सबसे मजबूत जोड़ियों में से एक मान रहा है। पिछले वर्ष यूएस ओपन के मिश्रित युगल प्रारूप में बड़े बदलाव किए गए थे, जिसका उद्देश्य इसे अधिक आकर्षक बनाने और दुनिया के नामी एकल खिलाड़ियों को एक साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित करना था। हालांकि इस बदलाव को लेकर मिली-जुली प्रतिक्रियाएं सामने आई थीं, पर इसका असर इस साल की स्टार-स्टडेड लाइनअप में साफ दिख रहा है।

इस बार भी कई चर्चित जोड़ियां मैदान में उतरने को तैयार हैं। ब्रिटेन के जैक ड्रेपर और अमेरिका की जेसिका पेगुला, जो पिछले वर्ष सेमीफाइनल तक पहुंचे थे, एक बार फिर साथ

खेलेंगे। पोलैंड की इगा स्वियातेक और नार्वे के कैस्पर रूड, जो पिछले साल उपविजेता रहे थे, भी अपनी साझेदारी को दोहरा रहे हैं। इनके अलावा, जापान की नाओमी ओसाका और केई निशिकोरी, अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज और कजाकिस्तान की एलेना राइबाकिना, तथा रूस की मिर्रा आंद्रेयेवा और आंद्रेई रुबलेव ने भी साथ खेलने की इच्छा जताई है। इन जोड़ियों के मैदान में उतरने से प्रतियोगिता का स्तर और भी ऊंचा होने की उम्मीद है।

हालांकि, कुछ बड़े नाम इस बार प्रतियोगिता का हिस्सा नहीं होंगे। स्पेन के युवा स्टार कार्लोस अल्काराज अपनी कलाई की चोट से उबर रहे हैं, और उनकी वापसी की तारीख अभी तय नहीं हुई है। वहीं, हाल ही में विंबलडन का खिताब जीतने वाले यानिक सिनर ने अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए पहले कनाडाई ओपन से नाम वापस लिया था और अब उन्होंने यूएस ओपन मिश्रित युगल में भी भाग नहीं लेने का फैसला किया है।

विश्व फुटबाल में घमासान जारी फीफा और यूईएफए आमने-सामने आये

लंदन

विश्व फुटबाल में विवाद गहरा गया है। वैश्विक संस्था फीफा और यूरोपीय फुटबाल महासंघ (यूईएफए) आमने-सामने आ गये हैं। उसके सदस्य देशों ने कड़ा रुख अपना लिया है। स्थिति इतनी गंभीर है कि यूईएफए अपने 55 सदस्य फुटबाल संघों की आपात बैठक बुलाने की तैयारी में है, जिसमें भविष्य के विश्व कप के संभावित बहिष्कार जैसे गंभीर विकल्पों पर चर्चा हो सकती है। इस विवाद का कारण फीफा की वह योजना है जिसके तहत वह अपनी एक नई इकाई फीफा फारवर्ड एंटरप्राइज में अल्पांश हिस्सेदारी बाहरी निवेशकों को बेचने की योजना बना रहा है। इस इकाई के पास पुरुष और महिला विश्व कप सहित फीफा की सभी प्रमुख प्रतियोगिताओं के व्यावसायिक और आयोजन संबंधी अधिकार होंगे। रिपोर्टों के अनुसार, फीफा इस पहल से लगभग 4.2 अरब डालर जुटाना चाहता है, जबकि इस इकाई का

प्रारंभिक मूल्यांकन 20 अरब डालर आंका गया है। इस योजना को आगे बढ़ाने के लिए फीफा ने वैश्विक वित्तीय सेवा कंपनी जे. पी. मार्गन की सेवाएं ली हैं, और अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दामाद जारेड कुशनर के भाई जोशुआ कुशनर की निवेश कंपनी थ्राइव इटरनल का नाम संभावित निवेशकों में सामने आया है।

वहीं यूईएफए ने फीफा के इस प्रस्ताव पर कड़ी आपत्ति जताते हुए कहा है फुटबाल की शीर्ष संस्थाओं को कभी इस प्रकार का काम नहीं करना चाहिए। यूईएफए का स्पष्ट मत है कि फुटबाल की आत्मा, उसका संचालन और उसकी पारदर्शिता किसी व्यावसायिक सौदे का हिस्सा नहीं बन सकती। संगठन ने दो टूक शब्दों में कहा है कि फुटबाल किसी एक संस्था की निजी संपत्ति नहीं है और इसे बेचा नहीं जा सकता।

गौरतलब है कि यह पहली बार नहीं है जब फीफा के किसी बड़े प्रस्ताव पर यूईएफए ने इतना कड़ा रुख अपनाया हो। इससे पहले 2021 में भी यूईएफए और यूरोपीय देशों ने विश्व कप को हर दो वर्ष में आयोजित करने के फीफा के प्रस्ताव का सफलतापूर्वक विरोध किया था। उस समय विश्व कप के बहिष्कार की चेतावनी के बाद फीफा को अपना प्रस्ताव वापस लेना पड़ा था।

वहीं दूसरी ओर, फीफा अध्यक्ष जियानी इन्फैन्टिनो ने इस प्रस्ताव का बचाव किया है। उनका तर्क है कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य फुटबाल की व्यावसायिक क्षमता को बढ़ाना और उससे होने वाली आय को दुनिया भर के सदस्य देशों तक पहुंचाना है, जिससे वैश्विक स्तर पर खेल के विकास को नई गति मिलेगी। फीफा ने अपने 211 सदस्य देशों को इस योजना के समर्थन के लिए अधिक आर्थिक सहायता का भी प्रस्ताव दिया है। योजना के अनुसार, वर्ष 2031 से 2034 के व्यावसायिक चक्र में प्रत्येक सदस्य संघ को 2 करोड़ डालर तक की सहायता मिल सकती है, जो मौजूदा 80 लाख डालर की व्यवस्था से काफी अधिक है। फीफा का यह भी कहना है कि नई इकाई बनने के बाद भी प्रतियोगिताओं, खेल के नियमों, अंतरराष्ट्रीय कैलेंडर और प्रशासनिक फैसलों पर उसका पूरा नियंत्रण बना रहेगा, साथ ही सदस्य देशों को इस नई वित्तीय व्यवस्था का हिस्सा बनने या न बनने की स्वतंत्रता भी होगी।